डॉ० श्रीराम परिहार और अमृतलाल वेगड़ के यात्रा–साहित्य में नर्मदा का सौंदर्य

डॉ० अनिल शर्मा
रुड़की

भौगोलिक दृष्टि से अन्यान्य भूखण्डों की तरह भारतवर्ष भी पर्वतों, नदियों, काननों, उपत्यकाओं तथा गाँवों–नगरों में परिव्याप्त है। किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति के विकास में नदियों का विशेष योगदान रहा है। प्राचीनकाल से ही भिन्न–भिन्न संस्कृतियाँ नदियों की घाटियों में जन्म लेकर पुष्पित और पल्लवित होती रही हैं। नदी प्रकृति की विशिष्ट एवं सुरम्य रचना है। प्रकृति की यह अनुपम रचना किसी झील से, हिमनद के पिघलने से या फिर पहाड़ों से पानी की पतली धारा के रूप में ढलान की ओर बहती है। बहुत–सी पतली धाराएँ मिलकर एक बड़ी नदी का आकार लेती हैं। प्रायः सभी बड़ी नदियाँ हजारों कि0मी0 बहने के बाद समुद्र में मिलती हैं। नदियों का प्रवाह सदैव एक समान नहीं होता है। उद्‌गम स्थल से लेकर प्रवाह पथ के दौरान नदी में मिलने वाली जल की मात्रा के साथ ही भौगोलिक कारण भी नदी के प्रवाह को प्रभावित करते हैं।

संसार के किसी भी देश की संस्कृति ने नदियों को इतनी श्रद्धा और अनुराग के साथ कभी ग्रहण नहीं किया होगा, जितना भारतवर्ष में। नदियों को भारतीय संस्कृति की अस्मिता से जुड़ी हुई जीवन धारा माना गया है। इन धाराओं से हम हिन्दुस्तानियों का आत्मिक रिश्ता है। इनसे हमारा माँ–बेटे का नाता है। जीवन संस्कृति को सींचती और विकसित करती ये जीवन धारायें निरन्तर प्रवाहमान है। प्रत्येक नदी की अपनी कोई न कोई विशेषता है। गंगा अपनी शीतलता के लिए जानी जाती है तो यमुना निर्मलता के कारण। नर्मदा को सौन्दर्य की नदी कहा गया है।

अनेक साहित्यकारों ने नर्मदा के सौन्दर्य को अपनी रचनाओं में भिन्न–भिन्न प्रकार से उकेरा है। डॉ0 श्रीराम परिहार के यात्रा वृत्त **"संस्कृति सलिला नर्मदा"** और अमृतलाल वेगड़ के यात्रा वृतांत **"सौन्दर्य की नदी नर्मदा"** में शिव–तनया, पुण्यतोया, सार्थक नाम्ना नर्मदा का सौन्दर्य बहुआयामी रूप में प्रकट हुआ है। नर्मदा के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए डॉ० श्रीराम परिहार लिखते हैं–

"नर्मदा भारतवर्ष की सबसे पुरानी नदी है। गंगा से भी पुरानी। समय की अनवरतता के साथ इसकी यात्रा भी अनवरत और अविराम है। वेदों में नर्मदा का उल्लेख नहीं है। कारण यह है कि वैदिक आर्य विन्ध्याचल को पारकर नर्मदा तक नहीं पहुँच पाये थे। महाभारत, मत्स्य, पदम, कूर्म, अग्नि, ब्रहमाण्ड और स्कन्द पुराणों में नर्मदा का बार–बार उल्लेख हुआ है। पृथ्वी पर नर्मदा के अवतरण की अनेक कथाएँ हैं। वह शांकरी है। रूद्रेह समुद्रभूता है। तांडव करते शिव के पसीने की बूँद से, हिरण्यतेजा राजा की तपस्या के फल से, राजा पुरूरवा के तप के प्रभाव से आदि–आदि कथाओं के माध्यम से नर्मदा की उत्पत्ति मानी जाती है। पर नर्मदा अमरकंटक में 'माई की बगिया' और आगे चलकर नर्मदा–कुण्ड में से ही निकलती हुई दृष्टिगत होती है।

सोमोद्‌भवा, नर्मदा, शांकरी, रेवा, मेकलसुता, दक्षिण गंगा, कृपा, विमला, चित्रोत्पला, विपाशा, रंजना, बालुवाहिनी, रूद्रदेहा आदि- इसके अनेक नाम है। यह आस्था का केन्द्र है। जन–जन के जीवन में गहरा राग नर्मदा ने जगाया है। यह राम संघर्ष की निरभ्र रजनी में भी सुनाई देता रहता है।

"गंगा कनखले पुण्यां, प्राच्यां पुण्या सरस्वती।
ग्राम्ये गोदावरी पुण्या, पुण्या सर्वत्र नर्मदा।।"

संसार की सभी प्रमुख संस्कृतियों का जन्म नदियों की कोख से हुआ है। उनके तटों पर हमारी आत्मा पल्लवित–पुष्पित होती है। नर्मदा की ऐतिहासिकता पर प्रकाश डालते हुए अमृतलाल वेगड़ लिखते हैं–

"भारतीय संस्कृति गंगा की देन है। पर एक बात है–श्रेष्ठ गंगा है, लेकिन ज्येष्ठ नर्मदा है। जब गंगा नहीं थी, नर्मदा तब भी थी। आज जहाँ हिमालय है, गंगा–यमुना का मैदान है, सुदूर अतीत में वहाँ उथला समुद्र था। किसी भूकम्प ने उस समुद्र को हिमालय और गंगा–यमुना के मैदान में बदल डाला, हालाकि इसमें करोडों वर्ष लगे। नर्मदा गंगा से पुरानी नदी है और विन्ध्याचल–सतपुड़ा हिमालय से पुराने पहाड़ हैं।

अमृतलाल वेगड़ ने नर्मदा की सुंदरता को अनेक विशेषण प्रदान करते हुए लिखा है–

"नर्मदा सौंदर्य की नदी है। यह नदी, वनों, पहाड़ों और घाटियों में से बहती है। मैदान इसके हिस्से में कम ही आया है। सीधा–सपाट बहना तो यह जानती ही नहीं। यह चलती है इतराती, बलखाती, वन प्रांतरों में लुकती–छिपती, चट्टानों को तराशती, डग–डग पर सौंदर्य की सृष्टि करती। पग–पग पर सुषमा बिखेरती।"

नर्मदा का उद्गम स्थल अमरकण्टक है। यहाँ नर्मदा कुण्ड में स्नान कर तन–मन का ताप शमन करने का पुण्य लिया जाता है। इस कुण्ड का जल और उसका सुखदायी स्वरूप इस स्थान को एक महानदी की नैसर्गिक और दिव्य जन्म–स्थली होने का गौरव देता है। यहाँ ये नर्मदा समुंद्र तक निरन्तर पश्चिम की ओर बहती चली जाती है। नर्मदा, उसके मंगेतर सोन तथा सखी जुहिला के सम्बन्ध में प्रचलित लोककथा को डॉ. परिहार अत्यन्त रोचक ढंग से प्रस्तुत करते हैं–

"शोण और नर्मदा की प्रणय कथा। जुहिला नामक नर्मदा की सखी ने सब गड़बड़ कर दिया। नर्मदा जुहिला को दूति बनाकर अपना प्रणय संदेश शोणभद्र के पास भेजती है। जूहिला शोण के व्यक्तित्व पर मुग्ध हो जाती है। वह नर्मदा का रूप लेकर सोन का वरण कर लेती है। यह बात नर्मदा को पता चलती है तो वह मारे क्रोध के उल्टे पाँव लौटकर पश्चिम की ओर वेगवती होकर चल पड़ती है। चट्टानों को तोड़ती, पहाडों को किनारे करती, उछलती, उत्ताल तरंगो से रव करती वह बहती ही चली जाती है। पीछे मुड़कर फिर नहीं देखती। उधर सोन को इस रहस्य का पता चलता है, तो वह भी विरह सन्तप्त होकर अमरकंटक के उच्च शिखर से छलाँग लगा लेता है। पूर्व की ओर विरह–विधुर मन लिये बह निकलता है। बहता ही चला जाता है। कुछ दूर जाकर जुहिला उसे मना लेती है। उसमें मिल जाती है। उसमें समा जाती है। लेकिन नर्मदा और सोन दो प्रेमी दो विपरीत दिशाओं में बह निकलते हैं। धरती की करूणा विगलित होकर नर्मदा और सोन के स्वरूप में अजस्र बह रही है।"

परिक्रमा करते हुए अमृतलाल वेगड़ ने नर्मदा और अमरकण्टक का कितना सुन्दर मानवीकरण किया है।

"नर्मदा की उंगली पकड़कर चल रहे थे। आमने–सामने ऊँचे, हरे–भरे पहाड़ और बीच में गहरी और संकरी घाटी में से बहती हुई तन्वंगी नर्मदा।

अमरकंटक का नाम मेकल भी है। इसलिए नर्मदा का नाम मेकलसुता भी है। मेकल अपनी बिटिया को वनाच्छादित घाटी में से किस हिफाजत से नीचे छोड़ गया है, इसे आज हमने अपनी आँखों से देखा।"

नर्मदा पहाड़ी नदी है, पर आरम्भ वह मैदान से करती है। अमरकंटक का पहाड़ वह आधे दिन में उतर जाती है। फिर शुरू होता है पचहत्तर किलोमीटर लम्बा डिंडौरी तक का मैदानी सफर। नर्मदा को मानो पहाड़ों से कोई सरोकार न हो। डिंडौरी से पहाड़ फिर शुरू हो जाते हैं, जो मण्डला तक अनेक घुमाव–फिराव लिए हुए हैं। मण्डला में प्रातःकालीन प्राकृतिक सौंदर्य का डॉ० श्रीराम परिहार द्वारा खींचा गया सुन्दर शब्द–चित्र देखिये–

"मेकल की पर्वत श्रेणियों से सूरज झाँकता है। धरती पर स्वर्णिम आलोक बिछ जाता है। वनराशि जाग जाती है। नर्मदा के जल में सरसों के फूलों का रंग घुल जाता है। पीपल की डाल नर्मदा के जल पर झुक जाती है। कोयल कूकती है। मण्डला नगर अपनी करवट में ॐ नमः शिवाय' कहता उठ खड़ा होता है। घाटों पर पदचाप और स्वर–गूँज रेवा के जल में अपना मुँह धोने उपस्थित हो जाती है। जल में डुबकी और एक सहज भाव दोनों, स्नानार्थी को भीतर से चोखा बनाने की राह खोजने लगते हैं। नर्मदा का जल बाहर की अपेक्षा कहीं अधिक भीतर को छूता है। माँ की नरम हथेली के स्पर्श का और माँ की ममत्वपूर्ण दृष्टि का एक साथ अहसास होता है। स्नान पर्व बन जाता है। व्यक्ति निहाल हो जाता है। नहाते–नहाते एक स्वर उभरता है और रेवा के जल पर तैरता हुआ घाटों पर आकर बैठ जाता है।

नहाय लैयो कासी झिरिया रे .....
कासी झिरिया रे कट जाहें, जनम के पाप हो।
नहाय लैयो.....।

मण्डला में नर्मदा के बड़े–बड़े घाट नहीं हैं। यहाँ के छोटे–छोटे घाटों की शोभा देखते ही बनती है। मानो नर्मदा का वृन्दावन हो यह। यहाँ खूब रास रचाया है नर्मदा ने। इन घाटों पर स्नान व्यवस्था और अनुशासन प्रशंसनीय है। इन घाटों के सौन्दर्य का मनोहारी चित्रण करते हुए डॉ0 श्रीराम परिहार लिखते हैं–

"धरती–आकाश के बीच जल की सन्निधि, माँ नर्मदा का आँचल और जीवन को बेखरोंच बचा ले जाने की क्षमता इन घाटों के स्नान–कर्म में देखी जा सकती है। स्त्रियाँ माँ नर्मदा की वत्सला महिमा में डूबी–डूबी पानी–पानी होकर मन ही मन कहती हैं–

ऐरी मैया नर्मदा तेरो जल अमृत लागे।
भाग बड़े जो तेरो संग पाये।
तेरी माटी को कन–कन है पावन
हर कन में शंकर मन भावन
जितै–जितै तेरो आँचल फैलो
सुरग वहीं बस जाये।"

नर्मदा संबन्धी व्रत और अनुष्ठान जहाँ धर्म के साधन पक्ष के पूरक हैं, वहीं संस्कृति के निर्माण में भी सहायक हैं। व्रत, उपवास तथा तंत्र–मंत्र आदि शरीर शुद्धि के हेतु हैं। मध्य भारत के ग्राम्य परिवेश में प्रत्येक कार्य का शुभारम्भ माँ नर्मदा की आराधना से किया जाता है। डॉ. परिहार के शब्दों में–

"फसल की बुवाई हो या फसल पकने की बिरिया, बेटे का ब्याह हो या कोख हरी करने की मान्यता, नर्मदा मैया के चरणों मे बैठकर अरदास के पान–फूल अर्पित किये जाते हैं। लोकगीत नर्मदा के जल की सतह से उठकर पूरे जंगल में फैल जाते हैं। जंगल गूँजने लगता है।

नरबदा तो ऐसी बही रे
ऐसी बहे रे जैसी दूध की धार हो।
नरबदा मैया हो.....।

मंडला के पास सहस्त्रधारा में भी नर्मदा का स्वरूप अत्यन्त दर्शनीय है। परिक्रमावासी अमृतलाल वेगड़ सहस्त्रधारा में नर्मदा के सौंदर्य को देखकर ठगे से रह जाते हैं। उन्हीं के शब्दों में

"अब हम सहस्त्रधारा के बिल्कुल सामने आ गए हैं। सामने हैं प्रपातों के गुच्छे के गुच्छे। दूध जैसा सफेद पानी पारिजात के पुष्पों की याद दिलाता है। नदी की डाली पर लगे ये प्रपात नदी के पुष्प ही तो हैं।

सहस्त्रधारा क्या है, पुष्पवाटिका है। सफेद फूलों की प्यारी सी बगिया। हम ठगे से देखते रहे। आँखें अघाती नहीं, कान थकते नहीं, मन भरता नहीं।

सहस्त्रधारा की काजल सी काली चट्टानें इतनी सख्त हैं कि लाखों वर्षो से पानी थोड़ा–सा ही तराश पाया है। नर्मदा यहाँ मूर्तिकार बन गई है। चट्टानों में तरह–तरह की आकृतियाँ उकेरी हैं। अमूर्त शिल्पों की विशाल कलावीथी है यहाँ। यह कला लाखों वर्षो पुरानी है, फिर भी इसे "गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट" नाम बड़े मजे से दिया जा सकता है।

नर्मदा का ऐश्वर्य देखते–देखते 'आठहूं' पहर मस्ताना माता रहे, आठहूं पहर की छाक पीवे' की स्थिति हो गई थी। मन में सुखद स्मृतियों का अंबार लग गया था। नर्मदा अपने रूप–रंग –रस से अभी भी झिलमिला रही थी।"

मण्डला की तरह सहस्त्रधारा में भी मेला लगता है। नवरात्रि पर दुर्गा उत्सव पूरे जोश और आनन्द के साथ मनाया जाता है। सावन में वर्षा के जल से भरपूर नर्मदा से एक ग्रामीण महिला की प्रार्थना का सुन्दर दृश्य डॉ० परिहार जी के शब्दों में देखिये–

"एक भरी–भूरी गृहस्थी की मंगल–कामनाएँ माँ नर्मदा से माँगी जाती हैं। स्त्रियों के कोकिल कंठों से जीवन की अनवरतता को सींचा जाता है। एक स्त्री घाट पर खड़ी है। नर्मदा में पूर है। सावन का महीना है। उसका वीरा रक्षाबंधन के त्यौहार पर लेने आने वाला है। उसका भाई उस पार खड़ा है। इस पार बहन खड़ी है। नर्मदा में पानी की खँडार उठ रही है। भाई कैसे पार हो? बहन नर्मदा मैया से प्रार्थना करती है– हे माँ नर्मदा! साँझ ढलने लगी है, मेरा वीर उस पार खड़ा है, अब थोड़ी उतर जा, ताकि मेरा भाई पार उतर आये।

साँझ जरा थम जईयो, हो रेवा मैया
साँझ जरा थम जईयो.....।
आये बाबुल की बहुत याद, हो रेवा मैया.....।
कैसो खुशी को सावन आयो
पीहर की याद को बचपन आयो
काल है राखी को त्यौहार,
मेरो वीरो खड़ों है बा पार, हो रेवा मैया.....।
सांझ जरा थम जईयो .....।"

रेवा नर्मदा का ही एक नाम है। दोनों एक ही हैं। फिर भी दोनों का तुलनात्मक स्वरूप अमृतलाल वेगड़ के दृष्टिकोण से देखिए–

"रात को नर्मदा की मर्मर ध्वनि बराबर सुनाई देती। प्रायः हर रात कल–कल बहती नर्मदा का रव सुनाई देता। दिन में वह भले ही नर्मदा हो, रात में रेवा है। दिन में वह दृश्य है तो रात में श्रव्य।"

सहस्त्रधारा और रामघाट के प्रपातों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए श्री वेगड़ बहुत भावुक हो गए हैं–

"रामघाट के प्रपातों को देखकर सहस्त्रधारा का स्मरण हो गया। अंतर यह है कि सहस्त्रधारा के प्रपात दूर–दूर तक बगरे हैं, जबकि यहाँ के प्रपातों का रेवड़ एक ही जगह इकट्ठा हो गया है। घोड़े के टाप के आकार की एक विस्तृत सपाट चट्टान से असंख्य जलधाराएं गिरती हैं। मोर जैसे पंख फैलाकर नाचता है, उसी तरह नर्मदा ने यहाँ अपनी जलधाराएं फैला दी हैं। वैसे प्रपात बहुत छोटे हैं, इक्के–दुक्के होते तो शायद ध्यान भी न जाता। पर ये तो है दल के दल, झुंड के झुंड। मृगछौनों की तरह हैं ये। लगता है, इन्हें गोद में ले लूँ, सहला लूँ, फिर कुलाचें भरने के लिए छोड दूँ।"

भेड़ाघाट में धुआंधार जल प्रपात यौवन और जीवन से भरपूर है। इसकी आबो–ताब देखने लायक है। जी करता है उसकी धमक को सुनते रहें और उसकी फुहार में भीगते रहें। अपने यात्रावृत्त **'संस्कृति सलिला नर्मदा'** में डॉ० श्रीराम परिहार इस प्रपात का जीवन्त चित्र प्रस्तुत करते हैं–

"भेड़ा घाट का वह जल–प्रपात जहाँ नर्मदा के नये–नये अचरज रचे हैं। जहाँ सत्य तरल होकर बूँद–बूँद में बँट रहा है। जहाँ झर–झर झरती बूँदियों की गोराई एवं लुनाई मिलकर प्रबल सम्मोहन और विराट सौन्दर्य सिरजती हैं। जहाँ लहर–लहर पर तैरता शिव किनारों को, धवल शिलाखण्डों को, उन पर खड़े मनुष्यों को और प्रकृति को रह–रहकर छू रहा है। जहाँ अनादिकाल से रेवा का जल ऊँचाई से नीचे की ओर उतर रहा है। पृथ्वी के गर्भ में जाकर वापस सतह पर प्रकट होकर उत्सव रच रहा है। संगमरमरी स्पर्शों के बीच ठुमुक–ठुमुक कर प्रवाहित होता धरती पर जीवन रेखा खींच रहा है।

विषपायी के उसी कण्ठ से निकली है– कला की अमृतधारा। भेड़ाघाट की दूधधारा। रसों की सहस्त्रधारा। आम्रकूट की नर्म धारा। जन–मन के सूखे गलों की तृप्ति धारा। पथ के पत्थरों को भिगोती अभिषेक धारा। घाट–घाट पर धूमधड़ाका करती उत्सव–धारा। विन्ध्य–सतपुड़ा के बीहड़ों में उछलती–कूदती विजय–धारा। जम्बू–द्वीप के मध्य प्रदेश की जीवन–धारा। शिव की हर्ष–धारा। नर्मदा की लहर–लहर खुशहाली के छन्द लिखती है, जिसकी बूँद–बूँद में शिव का शिवत्व घुला हुआ है।

'नर्म (हर्षम्) ददाति इति नर्मदा।'

धुआंधार में नर्मदा की प्रचण्डता का सुंदर चित्र अमृतलाल वेगड़ ने भी अपने यात्रा वृत्त **'सौन्दर्य की नदी नर्मदा'** में बहुत मनोहारी ढंग से खींचा है–

"चौड़ी नर्मदा यहाँ हठात संकरी हो गई है और एक खण्ड में प्रचण्ड वेग के साथ गिरती है। दूर से ही जल बिंदुओं का धुआं सा उठता दिखाई देता है, इसलिए इसे धुआंधार कहते हैं।

दूर से दबी–दबी सी सुनाई देने वाली गड़गड़ाहट पास आने पर कर्णभेदी घोष में बदल गई। यहाँ का तांडव देखते ही बनता है। चट्टानों पर मानो हजारों मूसल बरस रहे हैं। पानी बड़े वेग से गिरता, लहरिए बनाता आगे बढ़ जाता है। नर्मदा पर यहाँ मस्ती का कैसा अलबेला नशा छाया है।

संगमरमरी चट्टानों के बीच आकर नर्मदा एकदम शान्त हो जाती है। विश्वास नहीं होता कि यह वही नर्मदा है जिसका थोड़ी देर पहले धुआंधार में क्या रौद्र रूप था! इस परिवर्तन को अमृतलाल वेगड़ अत्यन्त सुंदर ढंग से प्रदर्शित करते हैं–

"इसी धुआंधार से नर्मदा संगमरमर की कुंजगली में प्रवेश करती है। संगमरमर की चट्टानों को चीरती हुई तंग घाटी में से बहती है और एक अद्भुत सौंदर्य लोक की सृष्टि करती है। कनक छरी सी इकहरे बदन की नर्मदा एक जगह इतना सिमट गई है कि इस स्थान को बंदर कूदनी कहते हैं। यहाँ नर्मदा मानो सुस्ता रही है या अत्यन्त मृदु गति से बह रही है। संगमरमर की विशाल दूधिया चट्टानें, अलस गति से बहती नीरव नर्मदा और एकांत– लगता है किसी नक्षत्र लोक में आ गए हैं।"

नर्मदा के इसी शान्त रूप को डॉ० श्रीराम परिहार अपने कल्पना–लोक में ले जाकर बहुत सुन्दर वर्णन करते हैं–

"नर्मदा आगे बढ़ती है तो संगमरमर की गलियों से लहराती हुई आगे बढ़ती है। धुआंधार के बाद नर्मदा छिप–सी जाती है। खड़े होकर आस–पास सफेद पत्थरों के और कुछ नहीं दिखता। नर्मदा शान्त हो जाती है। चुप–चुप सी। दोनों ओर सफेद पत्थरों के पहाड़। ऐसा लगता है कि धुँआधार में गिरती नर्मदा को धरती माँ दोनों को सहला रही हो। अपनी गोरी–गोरी हथेलियों से उसके गालों को सहला रही है। उसे समझा रही हो। नर्मदा उन हथेलियों से अपने को बार–बार रगड़ती है। बीच में से बहती है। स्थिर होती है। सुस्ताती है। अपनी चपलता से गंभीरता को गुनती है। संगमरमर से बने धरती के उस धवल आँचल में मेकलसुता ममता का स्वाद चखती है।"

हंडिया के पास चट्टानों में से बहती नर्मदा बहुत संकरी हो गई है। यही तो नर्मदा की विशेषता है। वह कब विराट में से वामन, द्रुत में से विलंबित, गहरी में से उथली, चौड़ी में से संकरी या नन्हीं–नाजुक में से जुझारू हो जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता। हल्ला–गुल्ला उसे पसंद है, लेकिन कोमल और शांत बनते भी देर नहीं लगती। बड़ी अप्रत्याशित नदी है यह आज कुछ, कल बिल्कुल अलग। नर्मदा का नाभि–स्थल कहे जाने वाले हंडिया–नेमावर में नर्मदा के सौंदर्य और लोक महत्व पर प्रकाश डालते हुए डॉ० परिहार लिखते हैं–

"नदी की यात्रा संस्कृति का निर्माण करती है। नर्मदा ने लोक को बहुत पोषा है। नर्मदा ने लोक के व्यवहार को गहरे प्रभावित किया। लोक ने नर्मदा के किनारों को कोलाहल से भर दिया। पत्थरों की रचना से मंदिर बनाये। घाट बनाये। इससे नर्मदा नदी न रही, वह लोक जीवन की स्रोतस्विनी बन गयी। इसके किनारों पर उतरती सुबहें जीवन की पलकें धोती हैं। इसके घाटों पर सुस्ताती शामें जीवन की उदासी पोंछती हैं। यह दृश्य नर्मदा के हंडिया–नेमावर में और लुभावना हो जाता है।"

हंडिया से 20–22 कि0मी0 पश्चिम में कच्चे रास्ते से होकर जोगा जाया जाता है। यहाँ नर्मदा में एक टापू पर किला है। नदी के मध्य स्थित यह किला किसी परीकथा के किले की याद दिलाता है। किले के ऊपर से दूर–दूर तक नर्मदा दिखाई देती है। जोगा में नर्मदा का ऐश्वर्य देखते ही बनता है। डॉ० परिहार जी ने यहाँ पर नर्मदा की सुन्दरता को इस प्रकार व्यक्त किया है–

"घाटों की अपेक्षा नर्मदा वन प्रांतर में अधिक सुंदर दिखती है। दर असल वह वन कन्या है। वनों में वह अधिक रमती है उसका उत्फुल रूप पहाड़ों के बीच ही खिलता है पत्थरों पर वह अपनी जलधारा से गति को विजयिनी बनाती है। प्रपातों से वह अपनी यात्रा को सौन्दर्यमय और उत्साहमय बनाती है। नर्मदा प्रपातों की नदी है। खुद सौन्दर्य से परिपूर्ण होकर उस सौन्दर्य को

अपने आसपास लुटा देने वाली नदी है। यह सौन्दर्य नर्मदा को और नर्मदा तटवासियों को संघर्षमय ताकत देता है। विपरीत स्थितियों में भी लगातार चलते रहने की सामर्थ्य देता है।"

खण्डवा जिले में नर्मदा पर जहाँ नर्मदा सागर बाँध बन रहा है, वहाँ से थोड़ी दूरी पर नर्मदा के किनारे **'किटी'** नामक छोटा सा वन ग्राम है। यह गाँव उत्तर तट पर है। दूसरी तरफ दक्षिण तट पर निमाड़ जिले का घना बहुमूल्य वन है। पेड़ से पेड़ सटकर खड़ा है। लगता है सागौन के पेड़ पर्यावरण प्रदूषण को लेकर कुछ चिन्तन–मनन कर रहे हैं। किटी में नर्मदा तट पर पक्का घाट नहीं है। किटी घाट से लगभग 5 कि.मी. नीचे पश्चिम की तरफ नर्मदा पर एक प्रपात है। इस सुन्दर प्रपात को कुछ लोग 'किटी फाल' कहते हैं। लोक परम्परा में इसे 'मन्धार' कहा जाता है। डा० श्रीराम परिहार ने मन्धार जल–प्रपात का बेहतरीन नजारा प्रस्तुत करते हुए लिखा है–

"मन्धार में नर्मदा खूबसूरत अचरज रचती है। लगभग पचास फीट ऊपर से नर्मदा गिरती है। नर्मदा का सारा जल दो–तीन धाराओं में सिमटकर नीचे गिरता है। लगता है नर्मदा का सौन्दर्य ही झर रहा है। जबलपुर के पास भेड़ाघाट में नर्मदा अधिक ऊँचाई से नीचे गिरती है। यहाँ अपेक्षाकृत कम ऊँचाई से गिरकर सौन्दर्य सर्जन करती है। परन्तु सौन्दर्य की बुनावट में कहीं अन्तर नहीं है। अनवरत गिरता जल गति को लय और संगीत दोनों ही देता है। जल–धार कुण्ड में गिरकर दूध बन जाती है। अनेक छोटी–छोटी पतली धाराएँ चट्टानों की संधियों के सहारे मुख्य धारा और कुण्ड में आकर मिलती हैं।

पास की चट्टानों की संधियों के सहारे मुख्य नर्मदा के इस निम्नगामी सौन्दर्य को देखना अच्छा लगता है।"

नर्मदा सागर बाँध के पास ही पुनासा नामक कस्बे से लगभग पन्द्रह किमी उत्तर में स्थित है, धारा क्षेत्र। धारा क्षेत्र को कुछ लोग 'धावडी घाट' तथा कुछ लोग 'धायडी कुण्ड' भी कहते हैं। इन्द्रधनुषी प्रपात के रव से गूँजता धावड़ी घाट वास्तव में बहुत सुन्दर है। अमृतलाल वेगड़ ने धावड़ी घाट की सुन्दरता को अपने शब्दों में पिरोकर यूँ प्रस्तुत किया है–

"इस तट पर धाराक्षेत्र, उस तट पर धायड़ी कुण्ड। यहाँ नर्मदा में छोटे–बड़े कई प्रपात हैं। उनकी आवाज सुनाई देने लगी तो ललचाई अधीरता से आगे बढ़ने लगे। थोड़ी देर में प्रपातों के पास आ गए। यहाँ बड़े–बड़े शिलाखंडों से टकराता हुआ पानी तेज गति से बह रहा था। इसमें से उठते हुए जलकणों में इन्द्रधनुष दिखाई दे रहा था। कैसा छोटा सा इंद्रधनुष। जापान में विशाल वृक्षों को बौने कद का बनाकर गमलों में उगाते हैं। इसे बोनजाई कहते हैं। नर्मदा ने जैसे यहाँ अपने गमले में बोनज़ाई इन्द्रधनुष उगाया है।"

कावेरी संगम के बाद आता है, मान्धाता। ठीक सामने है **ओंकारेश्वर, नर्मदा तट का सबसे बड़ा तीर्थ**। मान्धता छोटी सी जगह है। मकान कम, धर्मशालाएँ अधिक, मान्धता में माँ नर्मदा का जो मनोहारी चित्र डॉ. परिहार जी ने खींचा है, वह हृदय को भीतर तक छू जाता है–

"सूरज के आते ही अंधेरा नभ में पोंछा लगाता हुआ पश्चिम द्वार से खिसक लेता है। रेवा के निर्मल नीर पर किरणें उतर–उतर कर किलोल करने लगती हैं। लहर–लहर पर सतरंगी परिदृश्य उभर आते हैं। किनारे के पत्थरों के माथों पर वनवासी सुलेख लिखने लगते हैं। घाट जाग जाते हैं। मान्धाता के आँगन में फैले रेवा के अथाह जल पर नावें खुलती हैं। तैरती हैं। नन्हें–नन्हें हाथ चाँटती (पतवार) लिए जीवन की गहराई को थाहने और लम्बाई को नापने निकल पड़ते हैं। ओंकारेश्वर मंदिर अरुण आलोक में स्नान करता है। उसकी धवलता सुबह की रवानगी में और अधिक सौम्य तथा नफीस हो जाती है। उसमें निनादित घंटियों, मंत्रों, आरती, करताल, पखावज

और नगाड़ों की समवेत आवाज मंदिर के द्वारों–गवाक्षों से निकलकर नर्मदा के घाटों पर उतरती है। जल को नमन करती है। ऊपर उठकर चारों तरफ की पहाड़ियों तक पत्तों–पत्तों, फुनगी–फुनगी में समा जाती है। हवा के पंखों पर सवार होकर अंतरिक्ष की धरती की गरिमा और महिमा का परिचय देने लगती है।"

मध्य प्रदेश के निमाड़ जिले में खण्डवा–इंदौर सड़क एवं रेल मार्ग पर मोरटक्का स्थल से 12 किमी. पूर्व में सड़क मार्ग से जुड़ी शिव की नगरी ओंकारेश्वर अपनी गौरव गाथा समेटे हुए है। नर्मदा अपने उत्तर तट पर विन्ध्याचल को काट कर एक द्वीप का निर्माण करती है। नर्मदा द्वारा रचा गया यह द्वीप, आकार में 'ॐ' सरीखा है, जिसे चारों तरफ से नर्मदा अपनी अँजुरी में रखे हुए है। नर्मदा की परिक्रमा पर निकले अमृतलाल वेगड शिव की नगरी ओंकारेश्वर में आकर अपनी भावांजलि प्रदान करते हुए कहते हैं–

"ओंकारेश्वर–पहाड़ी नदी का पहाड़ी तीर्थस्थान। नर्मदा यहाँ गर्भस्थ शिशु सी जान पड़ती है। संकरी नर्मदा के दोनों ओर खड़ी चट्टानी कगारें हैं। इस तट पर मान्धाता, उस तट पर ओंकारेश्वर, दोनों मिलकर ओंकार–मान्धाता और बीच में अलग गति से बहती शांत, नीरव नर्मदा। नदी बहती हुई भी रुकी सी जान पड़ती है। नर्मदा तट के छोटे से छोटे तृण और छोटे से छोटे कण न जाने कितने परिव्राजकों, ऋषि–मुनियों और साधु–संतों की पद धूलि से पावन हुए होंगे। यहाँ के वनों में अनगिनत ऋषियों के आश्रम रहे होंगे। वहाँ उन्होंने धर्म पर विचार किया होगा, जीवन मूल्यों की खोज की होगी और संस्कृति का उजाला फैलाया होगा।"

ओंकारेश्वर पहाड़ के चारों तरफ नर्मदा के पार की स्थिति देखें तो वहाँ भी अनेक दर्शनीय स्थल पग–पग पर इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व को अक्षुण्ण रखे हुए हैं। नर्मदा के उत्तर में ओंकारेश्वर मंदिर में जो लिंग है वह प्रणव ओंकार है। रेवा के दक्षिण में ममलेश्वर मंदिर में जो शिवलिंग है वह पार्थिव लिंग है। ओंकारेश्वर के प्रति अपने श्रद्धा के भाव व्यक्त करते हुए डॉ० श्रीराम परिहार लिखते हैं–

"ॐकार क्षेत्र स्थित लिंग पाँच कलाओं से पूर्ण है। यह पंचमुखी लिंग सृष्टि के सृजन और संहार का केन्द्र है। यह लिंग आज भी निराकार ही है। न इसका आकार गोल है, न शून्य है। इसे कोई स्वरूप नहीं दे सकते। यह लिंग वैदूर्यमणि पर्वत के दक्षिण तथा नर्मदा के उत्तर में प्रकट है। यहाँ नर्मदा अथाह है। ऐसा लगता है कि पर्वत के भीतर तक नर्मदा बहुत गहरी चली गयी और यह लिंग रेवा के जल पर ही तैरते हुए स्थिर हैं।

कावेरिका नर्मदयोः पवित्रे समागमे सज्जनतारणाय।
सदैव मांधातिपुरे वसन्त ओंकारमीशं शिवमेकमीडे।।

(ज्योतिर्लिंग स्तोत्रम्)

आगे ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग का पावन दृश्य देखिए–

"इसी क्षेत्र में नर्मदा के दक्षिण में गौमुख से सीढ़ियाँ चढ़ते–चढ़ते जाइये। सामने ममलेश्वर का विशाल मंदिर है। काले पत्थरों से बना यह मंदिर इतिहास और संस्कृति की अनेक घटनाएँ सहेजे हुए है। मूल मंदिर बहुत पुराना है। मंडप की दीवारों पर संस्कृत में शिव महिमा स्तोत्र उत्कीर्ण है। यह पाँच मंजिला है। नर्मदा के उत्तर तट पर बना ओंकारेश्वर का मूल मंदिर भी पाँच मंजिला है। दोनों की बनावट एक सरीखी है। ममलेश्वर मंदिर में स्थित शिवलिंग, शिव के बारह ज्योतिर्लिंग में से एक माना जाता है। बारह ज्योतिर्लिंग स्तोत्र में इसका स्पष्ट उल्लेख है–

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालं ओंकारे ममलेश्वरम्।।

मण्डला की सहस्त्रधारा का वर्णन पूर्व में आ चुका है। एक बड़ी सहस्त्रधारा और है महेश्वर के पास। महेश्वर की सहस्त्रधारा में मन प्रफुल्लित हो उठता है। जल–धाराओं के साथ मन भी दौड़ने लगता है। इन धाराओं से व्यक्ति को ताकत भी मिलती है और आगे बढ़ने की प्रेरणा भी। परिकम्मावासी अमृतलाल वेगड़ यहाँ का सौन्दर्य देखकर मंत्रमुग्ध हो जाते हैं–

"थोड़ी देर में शोर सुनाई पड़ने लगा तो चाल तेज हो गई। देखते–देखते सहस्त्रधारा आ गए। नर्मदा यहाँ खूब फैल गई है, हजारों धाराओं में बट गई है। इन धाराओं में छोटे–छोटे अनगिनत प्रपात फड़फड़ा रहे हैं। चारों ओर धाराओं का जाल सा फैला है। इन आड़ी–टेढ़ी, आंकी–बांकी जलधाराओं से नर्मदा ने यहाँ मानो झीनी–झीनी बीनी रे चदरिया।

पानी की चादर, जलधाराओं के ताने–बाने, चट्टानों का करघा! ऐसी चादर तो बस नर्मदा ही बुन सकती है और बस धरती ही ओढ़ सकती है।

और यह धारा शब्द नर्मदा के साथ खूब जुड़ा हुआ है। अमरकंटक से निकलते ही कपिलधारा और दूधधारा। मंडला की सहस्त्रधारा, बरमानघाट की सतधारा, ओंकारेश्वर के पास धारा क्षेत्र और महेश्वर के पास पुनः सहस्त्रधारा! कैसी धारा प्रवाह नदी है यह!

जहाँ–जहाँ धारा शब्द आया है, वहाँ प्रपात जरुर है। चाहे कपिलधारा जैसा ऊँचा प्रपात हो, चाहे सहस्त्रधारा के इन तितलियों जैसे छोटे–छोटे प्रपात हों। जबलपुर के धुआंधार में धारा शब्द आते–आते रह गया। वैसे धार, धारा का ही तो अनुज है!"

'सहस्त्रधारा' में ही नर्मदा के सौन्दर्य का ऐसा लयबद्ध वर्णन डॉ. श्रीराम परिहार ने किया है मानो नर्मदा गद्य रूप में भी कविता बनकर बह रही हो–

"नर्मदा जीवंत संस्कृति की प्रतीक नदी है। वह नहीं ही रुकेगी। वह हजारों धाराओं में बँटकर बहती है। लेकिन जल कहीं टूटता नहीं है। जल की सबसे बड़ी यही खासियत है। बूँद–बूँद बनकर समुद्र बन जाता है। समुद्र फिर बूँद और बूँद पुनः धारा और समुद्र में समाहित। एक शाश्वत प्रक्रिया। अनवरत जीवन की धारा का संकेत। सृष्टि पर ललित के 'अक्षत' बने रहने की अभरात। हजारों धाराओं में दौड़ती नर्मदा समन्दर की ओर उतावली के साथ गतिमान होती है। यहाँ नर्मदा के दोनों किनारों को विशाल शिलाखण्ड छूते हैं। बीच में उभरे हैं। इन शिला–संधियों में से रेवा रव करती, ठिठोली करती–सी खिलखिला उठती है। बड़ी चंचल हो उठती है शिवकन्या यहाँ। जो नर्मदा महेश्वर के घाटों पर स्थिर–सी है। शांत है। गंभीर है। प्रौढ़ है। धरती के गर्भ को छूती जान पड़ती है। उसी नर्मदा के पानी की हजार–हजार धाराएँ धरती के प्यासे कंठों को तर करने की चाह में उमड़–घुमड़ पड़ती हैं। नर्मदा आगे की राह लेती है। नर्मदा जा रही है– समुद्र की ओर। चलती ही जाती है। समय चल रहा है। नर्मदा भी बह रही है। काल के सफों पर अमरता की लकीर–सी खींची चली जा रही है।"

माँ नर्मदा के दोनों तटों पर कण–कण में सौन्दर्य बिखरा है। पग–पग पर तीर्थ हैं। नर्मदा उद्दाम वेग और असीम सौन्दर्य का एक साथ वरण और निर्वाह करने वाली नदी है। अमृतलाल वेगड़ ने शूलपाण की झाडी में नर्मदा के सौन्दर्य का वर्णन इस प्रकार किया है–

"नीचे बहती नर्मदा की हल्की–हल्की छप–छप सुनते हुए ऊंची पहाड़ी पगडंडी पर से चले जा रहे हैं। ज्यों–ज्यों आगे बढ़ते हैं, पहाड़ों का एक शतदल मानो खुलता जाता है।

पहाड़ के बाद पहाड़, मोड़ के बाद मोड़ और ठसाठस पहाड़ियों में से राह निकालती आंकी–बांकी, संकरी नर्मदा। यह है शूलपाण की झाड़ी। प्रकृति मानो यहाँ नर्मदा के धागे में पहाड़ियों का गजरा गूथती चली गई है।"

नर्मदा पर कई जगह बाँध बन रहे हैं। इन बाँधों के कारण जो विशाल झीलें निर्मित हो रही हैं, उनमें सैंकड़ो गांव अदृश्य हो जाएंगे। सैकड़ों मील लंबे किनारे डूब रहे हैं। झीलों में संजोकर रखे जाने वाले अनमोल पानी को नहरों के माध्यम से दूर–दूर के प्यासे खेतों को पहुँचाया जा रहा है। मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और सुदूर राजस्थान तक को इसका लाभ मिल रहा है। अमृतलाल वेगड़ नर्मदा के सौन्दर्य की कीमत पर उसकी उपयोगिता का समर्थन करते हुए कहते हैं–

"आज नर्मदा बहुत सुंदर नदी है। इन बांधों के कारण उसका सौन्दर्य निस्सन्देह कम हो जाएगा। पर उसकी उपयोगिता हजार गुना बढ़ जाएगी। नर्मदा का जो विशाल जल भण्डार अभी तक व्यर्थ जाता था, वह अब नहीं होगा। न अचानक बाढ़ का खतरा रहेगा, न सूखे का डर। लोगों को आकाश को ताकते हुए नहीं जीना पड़ेगा। जमीन पानी के लिए तड़पेगी नहीं, तड़केगी नहीं। ढोर भूख से मरेंगे नहीं। बहुत सी वीरान, उजाड़ और अभी तक बेकार पड़ी जमीन कृषि योग्य हो जाएगी। उद्योग और कृषि दोनों में क्रान्ति आ जाएगी।

ये बांध होंगे पानी के रिजर्व बैंक। जब चाहो, जितना चाहो, पानी ले लो।"

उपयोगिता भी दूसरे अर्थों में सौन्दर्य का ही रूप है। देशकाल, परिस्थिति के साथ–साथ चीजें बदलती हैं और बदलनी भी चाहिएं।

अपने अन्तिम छोर गुजरात में आने के बाद नर्मदा का स्वरुप कितना बदल गया है! अब नर्मदा शांत हो जाती है। सागर संगम पर नर्मदा के संघर्षों को विराम सा लग जाता है। अमृतलाल वेगड़ ने इस स्थिति की बहुत सुंदर झांकी प्रस्तुत की है–

"अब वह शांत और संतुलित बहती है, क्योंकि अब उसे संघर्ष करने की आवश्यकता नहीं रही। चट्टानें कब की गायब हो गई हैं, अब केवल रेत या मिट्टी है। नर्मदा का पाट चौड़ा हो गया है और चाल मंद। उसकी धारा तो अविरल बह रही है, लेकिन उसकी कलकल सुनाई नहीं देती। नर्मदा बोलने कम और सुनने ज्यादा लगी है। अब वन–विहार नहीं रहा, पहाड़ों से लुका–छिपी का खेल नहीं रहा। यहां तक कि जिन पाँच तत्वों से नर्मदा की देह का निर्माण हुआ है–पानी, चट्टान, प्रपात, शोर और मोड़ इनमें से एक–एक करके अधिकतर छूटते जा रहे हैं। सबसे पहले गया प्रपात। इसके बाद चट्टान। चट्टान के साथ ही शोर भी चला गया। मोड़ भी पहले जैसे नहीं रहे।"

परिक्रमा के अन्तिम चरण में अमृतलाल वेगड़ भावुक हो जाते हैं। एक अबोध बालक की तरह माँ नर्मदा से बतियाते हैं। उनकी आँखों में खुशी के आँसू हैं। यहाँ एक यादगार दृश्य उपस्थित हो जाता है–

"असीम और अपार है मेरी खुशी। आखिर मैं समुद्र तक आ पहुँचा था। नर्मदा के उद्गम से संगम तक की मेरी यात्रा पूरी हुई थी। जीवन का बहुत बड़ा स्वप्न साकार हुआ। खुशी से मैं छलछला उठा। ओह जीवन कितना सुखद है।

मेरे हाथ अपने आप जुड़ गए। मैंने नर्मदा का आह्वान किया। आह्वान नहीं किया, बल्कि रो पड़ा। प्रसन्नता के सहज, स्वच्छ आंसू मेरे गालों पर ढुलक रहे थे। काफ़ी देर तक चुपचाप बैठा मैं मन ही मन नर्मदा का यशोगान करता रहा।

माँ नर्मदे! अपने शाश्वत् सौन्दर्य से तुम नित नूतन हो, चिर नवीन हो! तुम जानी–पहचानी हो, फिर भी अद्भुत हो! मृदुल सरिता! तुम्हें मैं बचपन से जानता हूँ, फिर भी तुम्हारे सौन्दर्य की झलक भर देख सका हूँ।

यहाँ मानो तुम समुद्र से कहती जान पड़ती हो, "मैं आ गई हूँ। मैंने अपने जीवन का काम पूरा कर लिया है। अब मैं अकलुष चेतना के साथ तुम्हारे पास आ सकती हूँ।" और समुद्र भी तुम्हें इस प्रकार स्वीकार करता है, मानो तुम उसके कलेजे का टुकड़ा हो।"

नर्मदा सागर में मिलती है। आत्मा परमत्मा में विलीन हो जाती है। डॉ. श्रीराम परिहार के इस दृश्यांकन से रोम–रोम पुलकित हो उठता है–

"जल ही जल है। कहाँ तक नर्मदा है और कहाँ तक समुद्र है, कुछ पता नहीं चलता। पर नाविक जानता है। नाव रुक सी जाती है। सब पूरी ताकत से बोल उठते हैं– 'नर्मदा मैया की जय।' हाथ जुड़ जाते हैं। माथ झुक जाते हैं। सारा अहं बर्फ–सा गल जाता है। नयनों की गंगा–नर्मदा में मिल जाती है। लगता है जीवन सफल हो गया। प्राण प्रार्थना बन जाते हैं। समूची जीवनी शक्ति अरदास बनकर नतमस्तक हो जाती है। बूँद–समुद्र में मिलती सी लगती है। एक संस्कृति–धारा–नदी महानिलय में जाती दिखाई देती है। धन्य जननी। जगदानन्दी। सौंदर्यशालिनी। संस्कृति स्त्रोतस्विनी। मातु नर्मदे। नमामि.....नमामि.....नमामि।

परकम्मावासी अमृतलाल वेगड़ नर्मदा के त्याग, तपस्या, सेवा और संघर्ष से प्रेरणा लेने की सीख देते हुए कहते हैं–

"यह नर्मदा, ऊँचे पर्वत–शिखर से उतरकर, धरती को तृप्त करती, अपना सर्वस्व लुटाती, निरंतर आगे बढ़ती, यहाँ आकर समुद्र में मिलती है। जिस दिन यह नर्मदा हमारे भीतर प्रवाहित होगी, हमारा सारा दृष्टिकोण ही बदल जाएगा। हम लेना नहीं देना चाहेंगे, जीना नहीं, जिलाना चाहेंगे। है यह कठिन। दूसरों के लिए जीना आसान नहीं। इसमें बहुत कष्ट झेलने पड़ते हैं। लेकिन स्वेच्छा से हम जो कष्ट उठाते हैं, वे भी मधुर लगते हैं"

आलेख के उपसंहार का समय आ गया है। नर्मदा के राशि–राशि सौन्दर्य में से मैं थोडा सा सौन्दर्य ले पाया हूँ। डॉ. श्रीराम परिहार के यात्रा–वृत्त **'संस्कृति सलिला नर्मदा'** और अमृतलाल वेगड़ के यात्रा–वृत्त **'सौन्दर्य की नदी नर्मदा'** में सौन्दर्य का अथाह सागर है, पर मैं उतना ही ले पाया हूँ, जितनी मेरी गागर है। मैंने भी इन दोनों ग्रंथों के माध्यम से .डॉ श्रीराम परिहार जी और अमृतलाल वेगड़ जी के साथ अमरकंटक से सागर संगम तक की लम्बी यात्रा की है। नर्मदा के बहुत सारे रूप देखे हैं, कभी इतराती, इठलाती, बलखाती चंचला नदी के रूप में तो कभी धीर–गम्भीर, शान्त नदी के रूप में। नर्मदा क्या है? कैसी है? बहुत कुछ समझा हूँ। एक बार फिर डॉ० श्रीराम परिहार जी के साथ माँ नर्मदा के अनन्य स्वरूप के दर्शन करना चाहता हूँ। आप भी कीजिए–

"नर्मदा, लोक की सर्जक। लोक संस्कृति की निर्मात्री। लोक की अधिष्ठात्री। वन देवी की प्रतिमा। धरती की रसधार। घाट–घाट पर उत्सवा। वन खण्डों में किलोला। पहाड़ों में संघर्षा। मैदानों में शान्ता। अँजुरी में अर्घ। हथेली में आचमन। झारी में जल। खेतों में पानी। प्यास में तृप्ता। तपन में शीतलता। अमावस–पूनम, वार–त्यौहार पर स्नान पर्वा। घाट–घाट पर पूज्या। शाप–ताप हरा। पतित पावनी। जगदानन्दी। अमरकण्ठी। मेकल सुता। वन कन्या। रेवा। भक्त वत्सला। मातु नर्मदे।"

यात्रा कभी समाप्त नहीं होती। न नदी की और न जीवन की। एक चक्र है जो घूमता ही रहता है। धूप–छाया, रात–दिन, सुख–दुःख, अंधकार–प्रकाश का यह खेल अपनी–अपनी बारी से चलता रहेगा। घनघोर काली अंधेरी रात के बाद प्रभात का होना निश्चित है। पतझर के बाद बसन्त का आना निश्चित है। समुद्र में मिलकर नर्मदा ठहर नहीं गई है। समुद्र का पानी बादल बनकर बरसेगा और नदियों के माध्यम से फिर समुद्र में आयेगा। डॉ० श्रीराम परिहार अपनी यात्रा वृत्त का समापन बहुत सुन्दर ढंग से करते हैं। इसमें अध्यात्म भी है, दर्शन भी है और मनोविज्ञान भी है–

"माँ तुझे तेरी संतान क्या दे सकती है। फिर भी तट पर से खरीद कर लाये पूजा की सामग्री से माँ का पूजन अर्चन करते हैं। चूड़ी, चुनरी चढ़ायी जाती है। धूप–दीप, नैवेद्य होता है। वन्दन होता है। जल की थाह नहीं। मन की थाह नहीं। फिर भी यहाँ मन जल के अधीन हो जाता है। जल का पतलापन और तरलता मन को बाँध लेती है। यह बंधन नेह–छोह का है। ममता का है। उसमें नेत्र, सबके नेत्र, नाव में बैठे सारे परकम्मावासियों के नेत्र बार–बार नहाते हैं। आँखों से झरते नेह का सोता रोके नहीं रुकता। अँजुरी भर जल आचमन बन जाता है। एक चिर प्यास चिर तृप्ति बन जाती है। फिर समुद्र ही समुद्र है। केवल समुद्र। केवल ब्रह्म। यह पूर्ण विराम नहीं, नयी यात्रा की शुरुआत है।"

–:नर्मदा मैया की जयः–